Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2018-2020 R.N.I. No. 72014/99 Posted at New Delhi PSO Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

निर्जरा

निरजरा ने निरजरा करणी,
ए दोनूंइ जीव नें आदरणी।।

आत्मशुद्धि और आत्मशुद्धि की प्रक्रियाये दोनों ही आदरणीय हैं।

● नई दिल्ली ● वर्ष 21 ● अंक 44 ● 10 - 16 अगस्त, 2020 ● प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 08-08-2020 ● पेज : 9 ● ₹ 10

व्यक्ति की वाणी में मधुरता होनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ५ अगस्त, २०२०

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के राम आचार्यश्री महाश्रमण जी आगम वाणी द्वारा श्रावक समाज का जनोद्धार कर रहे हैं। ठाणं सूत्र के सातवें स्थान की व्याख्या चल रही है। पूज्यप्रवर ने देषणा देते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने स्वर पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि स्वर सात है। षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैयवत और निशाद। स्वर का सामान्य अर्थ है, ध्वनि-नाद। संगीत में प्रयुक्त स्वर का विशेष अर्थ होता है। संगीत रत्नाकर में व्याख्या करते हुए बताया गया है कि जो ध्वनि मर्यादित अंतरों पर स्थित हो। श्रोताओं को आकृष्ट करने वाली हो जिसमें कंपन हो, वह स्वर होता है।

पहला स्वर बताया है षडज। षड–यानी छ, ज यानी पैदा होने वाला, छ से पैदा होने वाला। छ–नासा, कंठ, छाती, जिह्वा, तालु और दंत। दूसरा है ऋषभ नासा, कंठ, छाती, नाभि से उठा हुआ वायु, कंठ और सिर से आहत होकर ऋषभ की तरह गर्जन करता है।

इसे ऋषभ स्वर कहते हैं। तीसरा स्वर है–गांधार। नाभि से उठा हुआ, वायु कंठ और सिर से आहत होकर व्यक्त होता है और इसमें एक प्रकार की विशेष गंध होती है। इसलिए इसका नाम है–गांधार। चौथा स्वर है–मध्यम। नाभि से उठा हुआ, वायु, वक्ष और हृदय में आहत होकर फिर नाभि में जाता है। यह काया के मध्य भाग में उत्पन्न होता है, इसलिए इसे मध्यम स्वर कहा जाता है। पाँचवाँ स्वर है–पंचम। नाभि से उठा हुआ वायु, वक्ष, हृदय, कंठ और सिर से आहत होकर व्यक्त होता है। यह पाँच स्थानों से उत्पन्न होता है, इसलिए इसे पंचम स्वर कहा जाता है। छठा है–धैयवत। यह पुर्वोस्थित स्वरों का अनुसंधान करता है। सातवाँ स्वर है–निशाद इसमें सब स्वर निःसन्न होते हैं। इससे सब अभिभूत होते हैं, इसलिए इसे निशाद कहा जाता है। तो ये सात प्रकार के स्वर हैं।

ठाणं में विभिन्न विषय बताए गए हैं। इन सात स्वरों के सात स्वर स्थान हैं। स्वर के उपकारी, विशेषता प्रदान करने वाले स्थान को स्वर स्थान कहा जाता है। षडज का स्थान जिह्वा का अग्र भाग। ऋषभ का स्वर स्थान वक्ष। गांधार का कंठ, मध्यम का जिह्वा का मध्य भाग, पंचम का नासा, धैयवत का दाँत और होठ का संयोग, निशाद का मुर्धा या सिर। जैसे षडज का स्थान जिह्वाग्र है, यदपि उसकी उत्पत्ति में दूसरे स्थान भी व्याकृत होते हैं और जिह्वाग्र भी दूसरे स्वर की उत्पत्ति में व्याकृत होता है, फिर भी जिस स्वर की उत्पत्ति में जिस स्थान का व्यापार भूमिका प्रधान होता है, उसे उसी स्वर का स्थान कहा जाता है। प्रधानता के हिसाब से सात स्वरों के सात स्थान बताए गए हैं।

ये सात स्वर जीव निश्रित हैं। प्राणियों के नाम बताए हैं। षडज स्वर मयूर। मोर षडज स्वर में बोलता है। कुक्कुट ऋषभ स्वर में, हंस गांधार स्वर में, ग्वेलक गाय मध्यम स्वर में बोलता है। कोयल बसंत में पंचम स्वर में, क्रौंच और सारस धैयवत स्वर में, और हाथी निशाद स्वर में बोलता है। अजीव निश्रित सात स्वर इस प्रकार हैं–षडज स्वर मृदंग से निकलता है। गौमुखी–नरसिंहा बाजे से ऋषभ स्वर, शंख से गांधार, स्वर, झालर या झाँझ से मध्यम स्वर, चार चरणों पर प्रतिष्ठित बोधि का से पंचम स्वर, ढोल से धैयवत स्वर और महाभेरी से निशाद स्वर निकलता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

शारीरिक कष्ट को समता से सहन करना होता है महाफलदायी : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ८ अगस्त, २०२०

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि निर्जरा या तप के बारह प्रकार होते हैं। इन बारह भेदों में पाँचवाँ तप है–कायक्लेश। यह बाह्य तप का एक भेद होता है। ठाणं आगम के सातवें स्थान में कायक्लेश के सात प्रकार बताए हैं। कायक्लेश से शरीर को कुछ कष्ट-श्रम पड़ता है। साधना करते-करते जो कष्ट होता है, उससे कायक्लेश होता है, निर्जरा होती है। साधु के नियम हैं, रात को खाना-पीना नहीं। भिक्षा के भी नियम हैं। नियमानुरूप मान लो भिक्षा नहीं मिली। आहार मिला नहीं और भूख लगी हुई है या पानी मिला नहीं है, प्यास लग रही है, इसे सहन करना कायक्लेश है। सर्दी-गर्मी में भी ऐसी स्थितियाँ आती हैं, तब भी कायक्लेश होता है। शरीर में जो कष्ट होता है, उसे समता से सहन कर लेना महाफलदायी होता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापथ टाइम्स
10 - 16 अगस्त, 2020

✦ धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

सच्चाई को पाने के लिए आग्रह और अनाग्रह होना अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ४ अगस्त, २०२०

भाद्रव महीना आते ही पर्युषण पर्व सामने दिखने लग जाता है। इस बार का पर्युषण अलग प्रकार से होने जा रहा है। न तो सामुहिक आराधना न तप-अनुमोदना के गीत। स्वयं अकेले साधना करें। यह भी एक संयोग है। पूज्यप्रवर का चतुर्मास भी योगक्षेम की तरह है। पर फिर भी हमें मीडिया के माध्यम से पूज्यप्रवर की अमृतवाणी सुनने का अवसर मिल रहा है। भाद्रव माह में ज्यादा से ज्यादा तप-आराधना हो, साथ में ज्ञान, दर्शन, चारित्र की भी आराधना हो। निरंतर स्वाध्याय चले। श्रावक समाज समय का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाएँ।

आचार्यश्री महाश्रमण जी आगम आधारित प्रवचन रूप में मंगल देषणा फरमा रहे हैं। ठाणं आगम के सातवें स्थान की विवेचना चल रही है। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि मूल नय सात है। यथार्थ को जानने का एक तरीका है, नयवाद। आदमी को यदि यथार्थ को जानना है, तो उसके लिए शर्त है कि दुराग्रह नहीं होना चाहिए। सत्याग्रह-सच्चाई का आग्रह ठीक है। सच्चाई को पाने के लिए अनाग्रह भी अपेक्षित है। जहाँ सच्चाई की शोध करना है, वहाँ अनाग्रह भी होना चाहिए। शोध के बाद बोध हो जाए फिर भले आग्रह हो। शोध और खोज में अनाग्रह हो मिल जाने के बाद भले आग्रह हो। 'आग्रहहीन गहन चिंतन का द्वार हमेशा खुला रहे।'।

शास्त्रकार ने कहा मूल नय सात है। पदार्थ को जानने के लिए अंश अंश के द्वारा जानने का प्रयास करें। पहला नय है नैगम। भेद और अभेदपरक दृष्टिकोण। भेद और अभेद हमारी दुनिया में चलता है। संग्रह नय अभेद वृत्तिकोण को देखने वाला है। भेद में अभेद है। चलते-चलते सारा विश्व एक है। मानव जाति है वो एक है ये अभेद हो गया। भेद की दृष्टि से पुरुष-स्त्री, बच्चे, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र ये भेद की दृष्टि से हैं। पंचेन्द्रिय के नाते गाय-भैंस मानव एक है। अभेद है। तीसरा है–व्यवहार नय। भेदपरक दृष्टि वाला। साधु है, उनमें बाल है, युवा है, वृद्ध है। नाम से फरक है। उम्र से फरक है ऐसे भेद करते चलो। चौथा है ऋजु सूत्र नय–वर्तमान क्षण को जानने वाला। वर्तमान में मैं सुखी हूँ। पाँचवाँ नय है–शब्द। रूढ़ि से होने वाली प्रवृत्ति को बताने वाला शब्द है, परंतु लिंग, वचन से अंतर पड़ जाता है। वे पहाड़ी है, ये पहाड़ है। ये लिंग भेद। ये मनुष्य है, यह मनुष्य है। एक वचन और बहुवचन का फर्क।

छठा नय है–समाधि रूढ़। व्युत्पत्ति से होने वाली प्रवृत्ति को बताने वाला दृष्टिकोण। कोई शब्द किसी का पर्यायवाची नहीं होता। सब अपना-अपना अर्थ करने वाला है। सातवाँ नय है–एवम। इसी प्रकार वर्तमान प्रवृत्ति अनुसार वाचन के प्रयोग को मान्य करने वाला दृष्टिकोण। यह भी शब्द की बहुत सूक्ष्मता में जाने वाला दृष्टिकोण है। पर्यायवाची कोई किसी का नहीं है, परंतु वर्तमान में प्रवृत्ति हो रही हो, वही शब्द उसे मान्य होगा। साधु का एक नाम आता है भिक्षु। पर भिक्षु गोचरी जाएँगे तब भिक्षु होंगे। वर्तमान में तो ये प्रवचन सुन रहे हैं, तो श्रावक हैं। श्रोता हैं। अध्यापक जब अध्ययन कराता है, तब तक अध्यापक है, बाद में नहीं। जिस समय जो प्रवृत्ति करे उस समय वो नाम लिया जाना ठीक है। प्रवृत्ति करे तभी द्योतक शब्द काम में लेना ठीक है। बाद में वो शब्द काम में नहीं लेना चाहिए।

दृष्टिकोण आदमी का यथार्थपरक हो कि हम बात को कैसे समझें? कौन सी बात किस भूमिका तक किस दृष्टिकोण से कही गई है। कहने वाले का दृष्टिकोण क्या है? अगर वहाँ तक समझ सकें, पहुँच सकें तो हमें उस आदमी की बात को यथार्थ रूप में समझाने का मौका मिल सकता है। आदमी खाना खाता है, उस समय सैंधव मांगल हो। सैंधव के दो अर्थ हैं–नमक और घोड़ा। पर जब जैसी स्थिति हो वैसी चीज लानी चाहिए किस संदर्भ में बात हो रही है, वो संदर्भ पकड़ में आ जाए तो यथार्थ का बोध हो सकता है।

हम साहित्य, ग्रंथ पढ़ते हैं, किसी से बात करते हैं, तो शब्द और अर्थ। शब्द एक रथ है, वाहन है, उसके ऊपर अर्थ रूपी राजा विराजमान है। शब्द तो एक साधन है। मूल तो अर्थ है। हमें शब्द के माध्यम से अर्थ को पकड़ने का प्रयास करने का मनोभाव रखना चाहिए। शब्दों के जंजाल में मूल चीज गौण न हो जाए। शब्दों में उलझे नहीं। शब्द का प्रयोग सही हो तो अर्थ का ज्ञान सही हो सकता है। हम ऋजुभाव से यथार्थ को समझें तो अच्छा हो सकता है।

मुनि दिनेश कुमार जी ने सामायिक के महत्त्व के बारे में समझाया।

व्यक्ति की वाणी में मधुरता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आदमी गाता भी है। गाने गाने में हम देखें किसी का संगान अच्छा, मधुर लगता है, लोग उसके संगान से आकृष्ट हो जाते हैं। कोई-कोई गाता है, उसका गाना न कंठ बढ़िया, न लय बढ़िया उसका गाना भी अच्छा नहीं लगता। हमारे यहाँ रामायण का वाचन होता है। रामायण में कितनी विभिन्न राग-रागिनियाँ हैं। राग अच्छी धारी हुई है, कंठ बढ़िया है, तो गीत का प्रभाव का सौष्ठव सामने आता है। बोलने में भी किसी की आवाज मधुर है, गंभीर है, कर्कश है, अलग-अलग प्रकार की होती है। प्राणियों की भी आवाज भी अलग-अलग प्रिय-अप्रिय होती है। आप भला तो जग भला। जगत को बदलना मुश्किल है, अपने आपको बदलने का प्रयास करें। मेरी आवाज, मेरा व्यवहार, मेरी नैतिकता-ईमानदारी के प्रति निष्ठा अच्छी चीजें मेरे जीवन में आ जाएगी तो मेरा जीवन अच्छा हो जाएगा।

शास्त्रकार ने आगे बताया है–इन सातों स्वरों के स्वर लक्षण सात हैं। जो आदमी षडज स्वर वाला होता है, वे आजीविका पाते हैं, उनका प्रयत्न निष्फल नहीं होता, उनके गायें, मित्र और पुत्र होते हैं। वे सबके प्रिय होते हैं। ऋषभ स्वर वाले व्यक्ति को ऐश्वर्य, सेनापतित्व धन, वस्त्र, गंध, आभूषण, स्त्री, शयन, आसन ये प्राप्त होते हैं। गांधार स्वर वाले व्यक्ति गाने में कुशल, श्रेष्ठ जीविका वाले, कला में कुशल, प्राज्ञ होते हैं। विभिन्न शास्त्रों के पारगामी होते हैं। मध्यम स्वर वाले व्यक्ति सुख से जीते हैं। पंचम स्वर वाले व्यक्ति राजा, शूर, संग्रहकर्ता और अनेक गणों के नायक होते हैं। धैयवत स्वर संपन्न व्यक्ति कलहप्रिय, पक्षियों को मारने वाले, हिरणों, सूअरों, मछलियों को मारने वाले होते हैं। निशाद स्वर वाले व्यक्ति चांडाल-फाँसी देने वाले, विभिन्न पापकर्म करने वाले, गौ-घातक और चोर होते हैं। ये सात स्वरों के आधार पर शास्त्रकार ने व्यक्तियों का विश्लेषण कर दिया। और भी व्याख्या है।

हमें इस बात से यह ग्रहण करना है कि स्वर है, एक तो गला है जैसा है पर आदमी बात तो बढ़िया करे। हम बोलने का तरीका यथार्थ पर आधारित, मधुर, बात को सोच-विचारकर बोलने का तरीका रखें तो हमारे बोलने का क्रम अच्छा हो सकता है।

मुनि दिनेश कुमार जी ने अरहंत शब्द की व्याख्या की।

गौत्र व्यवस्था के रूप में हो विवाद का कारण न बने : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ३ अगस्त, २०२०

मंगल देषणा प्रदान कराते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि ठाणं आगम के सातवें अध्याय में कहा गया है–मूल गौत्र सात हैं। ठाणं में गौत्र के बारे में चर्चा की गई है। वर्तमान में अनेक गौत्र हो सकते हैं। प्राचीन काल में मूल गौत्र सात ऐसा बताया गया है। मूल गौत्र–एक पुरुष को उत्पन्न वंश परंपरा। मूल गौत्र सात–काश्यप, गौतम, वत्स, कौटस, कौशिक, मांडव या मांडव्य, वाशिष्ठ। प्राचीन काल में ये सात मुख्य गौत्र थे। बाद में काल के प्रभाव से अनेक-अनेक गौत्र विकसित होते गए।

इस शास्त्र के टीकाकरण ने कुछ उदाहरण दिए हैं, इन गौत्रों में कौन-कौन व्यक्ति हुए हैं, नाम संकेत किए हैं। काश्यप गौत्र में हमारी जैन परंपरा में इस अवसर्पिणी में जो चौबीस तीर्थंकर हुए हैं, उनमें से बाईस तीर्थंकर इस गौत्र से थे। बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत स्वामी और बावीसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमी काश्यप गौत्र से नहीं थे और इस अवसर्पिणी के सारे के सारे चक्रवर्ती और भगवान हावीर के ग्यारह गणधर हैं, उनमें से सातवें से ग्यारहवें तक पाँच गणधर और जम्बू स्वामी ये सब काश्यप गौत्रिय थे। इस गौत्र में क्षत्रिय, ब्राह्मण और वैश्य सभी हैं। यह गौत्र कितना व्यापक और महत्त्वपूर्ण रहा है। गौतम गौत्र में हमारे गौतम स्वामी, भगवान मुनि सुव्रत स्वामी और अरिष्टनेमी गौतम गौत्रीय थे।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आत्मा का शरीर से संपूर्णतया वियोग हो जाना मोक्ष है : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, २ अगस्त, २०२०

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी हैदराबाद प्रवासियों एवं समस्त तेरापंथ समाज को रविवर की विशेष सौगात प्रदान कराई है। विषम परिस्थितियाँ होते हुए भी ऑन लाइन श्रावक सम्मेलन का आयोजन करवाया है। आचार्यप्रवर ने श्रावक समाज को विशेष प्रेरणा देते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में कहा गया है–छद्मस्थ के लक्षण बताए गए हैं। छद्म यानी आवरण। जिस जीव पर ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय कर्मों का आवरण है, ध्यान दें आवरण कितने जन्मों से जुड़ा हुआ है। दो शब्द हैं–छद्मस्थ और केवली। दोनों एक-दूसरे के विरोधी है। जो आवरण में रहता है, वह जीव छद्मस्थ है। छद्मस्थ बारहवें गुणस्थान तक रह सकता है।

छद्मस्थ का विलोम शब्द है–केवली। जिसके छद्म-आवरण नहीं रहा। केवली पर ज्ञानावरण-दर्शनावरण का आवरण नहीं रहता। केवली के चारों घाति कर्म नहीं होते। जिसके ज्ञानावरण-दर्शनावरण कर्म का उदय है, वह जीव छद्मस्थ है। शास्त्रकार ने सात लक्षण बताए हैं। जिनसे छद्मस्थ जाना जा सकता है। यहाँ जो सात लक्षण बताए हैं, वो बारहवें गुणस्थान में नहीं हो सकते। ये सात लक्षण छठे गुणस्थान तक ही रहते हैं, कारण छठे में तो प्रमाद है, उसके बाद प्रमाद नहीं है। प्रमाद है तो छद्मस्थ है। अप्रमत्त व्यक्ति अशुभ योग का सेवन नहीं कर सकता।

पहली बात है जो प्राणों का प्रतिपाद करता है, जीव हिंसा करता है। वह छद्मस्थ है। केवली इरादतन हिंसा नहीं करता। हो जाती है वो अलग बात है। पर हिंसा की नहीं जाती। दूसरी बात है, जो मृषा बोलता है। तीसरी बात जो अदत का ग्रहण करता है। छठे गुणस्थान वाला साधु मृषा बोल सकता है, अदत ले सकता है। चौथी बात है जो शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध में आसक्त रहता है, पदार्थों में आसक्त रहता है। साधु के मन में भी आस्वाद की भावना आ सकती है। पाँचवाँ लक्षण बताया जो पूजा और सत्कार का अनुमोदन करता है। लोग मेरी पूजा-सत्कार करे, मेरा यश फैले। समाचार पत्रों में टीवी में मेरा नाम आए। साधु के मन में ख्याति की भावना आ सकती है। छठी बात बताई है–यह सावद्य संवाद है ऐसा कहकर सावद्य का सेवन करता है। दोष मानते हुए भी सेवन कर लेता है। सातवाँ लक्षण है–जो जैसा कहता है, वैसा नहीं करता। छठे गुणस्थान वाला साधु भी वैसा कर सकता है। कथनी-करणी की असमानता होती है।

जो केवली है, वो ये सातों बातें नहीं करते। ये लक्षण छठे गुणस्थान वाले साधु के ही हो सकता है। शास्त्रकार ने छद्मस्थ और केवली के सात-सात लक्षण बताए हैं। दोनों एक-दूसरे विपरीत होते हैं। बारहवें गुणस्थान तक साधु छद्मस्थ होता है, पर ये लक्षण छठे से आगे नहीं हो सकते। साधु से गलती हो सकती है, क्योंकि साधु भी अभी छद्मस्थ है। साधु न सिद्ध हुआ है, न केवली और अप्रमत्त भी नहीं हुआ है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गौत्र व्यवस्था के रूप में हो...

(पृष्ठ २ का शेष)

इस अवसर्पिणी में बलदेव वासुदेव हुए हैं–नारद और पद्म को छोड़कर सारे बलदेव गौतम गौत्रिय थे। गणधरों में इंद्रभूति, अग्निभूति, वायु भूति ये तीनों गौतम गौत्रिय थे।

तीसरा है–वत्स गौत्र इसका उदाहरण है, हमारे जैन शासन के श्रुत केवली आचार्य शंयम भव जो दसवें आलियं के निर्युहणकर्ता हुए थे। चौथा वत्स गौत्र है, इसमें सुभूति आदि उस गौत्र से थे। कौशिक गौत्र से षड्लुक, रोहगुप्त आदि थे। मांडव गौत्र से मंडु ऋषि के जो वंशज हुए वे इस गौत्र से थे। सातवाँ मूल गौत्र है वाशिष्ठ। ये वशिष्ठ के जो वंशज हुए हैं और हमारे छठे गणधर व आर्य सुहस्ति आदि इस गौत्र से थे। शास्त्रकार ने इन मूल गौत्रों का विस्तार भी दिया है। काश्यप सात प्रकार के होते हैं। काश्यप, शांडिल्य, गोल आदि सात प्रकार हैं। गौतम गौत्र के भी सात प्रकार हैं–गौतम गार्य, भारद्वाज आदि। वत्स गौत्र के सात प्रकार वत्स, आग्नेय, नैत्रेय आदि इस गौत्र से हैं। कौत्स गौत्र के सात प्रकार कौत्स, पौदगलायन, पिंगलापन आदि है। कौशिक गौत्र के सात प्रकार–कौशिक, कात्यायन, आग्नेय आदि मांडव गौत्र के सात प्रकार–मांडव, अरिष्ट, समुद् आदि। वाशिष्ठ गौत्र के सात प्रकार–वाशिष्ठ, उन्जायन, व्याघ्रापत्य आदि। ये विस्तार से गौत्रों के बारे में ठाणं के सातवें स्थान में जानकारी दी है।

गौत्र आदमी से जुड़ जाता है या आदमी गौत्र से जुड़ जाता है। आज मनुष्य विभिन्न जातियों, गौत्रों में बँटे हुए हैं। एक बाँटने की भी उपयोगिता हो सकती है। परंतु यह विभाजन है, वह हिंसा का कारण है। इतनी गौत्र जातियाँ हैं, इनकी उपयोगिता, महत्त्व हो सकता है, आदमी को गौत्र का इतना अहंकार भी न आ जाए कि वह कर्तव्य से च्युत हो जाए। या न होना है, वैसा हो जाए। व्यवहार में जो उचित हो, वह किया जा सकता है। मौके पर अपना काम स्वयं करें, क्या दिक्कत है।

गौत्र एक व्यवस्था हो सकती है। जातिवाद, वर्णवाद, व्यवस्था हो सकती है, ये वाद-विवाद न बनें। संवाद बने। हिंसा-नफरत के कारण न बने। आदमी आदमी से मैत्री करे। मानव जाति एक अपेक्षा से एक है। भेद भेद है, अभेद अभेद है। भेद में अभेद देखा जा सकता है, अभेद में भेद भी देखा जा सकता है, पर विद्वेष न हो। समाज में, देश में, राष्ट्रों में, विश्व में काले, गोरे व अनेक गौत्र वाले हो सकते हैं, पर आपस में विद्वेष न हो। यह अहिंसा की दृष्टि से अपेक्षित है। आठ कर्मों में एक है, गौत्र कर्म। अहंकार करने वाला नीच गौत्र कर्म का बंध कर सकता है। निरहंकारता है तो उच्च गौत्र कर्म का बंध हो सकता है। आदमी में विभिन्न भाव होते हैं, वे भाव हमारे अच्छे बने। हम भाव से स्वभाव में रहें। विभाव में जाने वाले न हो तो हम अच्छी गति कर सकते हैं।

चतुर्मास का समय है, आज रक्षाबंधन का दिन है। श्रावणी पूर्णिमा संस्कृत दिवस भी है। भाई-बहन के संबंध की अभिव्यक्ति का दिन है। हमारी बहन हमारी आत्मा है, उसकी रक्षा करें। जागरूक होकर उसे पापों से बचाएँ। औरों से राखी बंधवाएँ या न बंधवाएँ, बाँधे या न बाँधे पर आत्मा रूपी बहन से राखी बंधाकर उसकी पापों से रक्षा करें।

मुनि दिनेश कुमार जी ने प्रायश्चित के एक प्रकार ग्रहा के बारे में विस्तार से समझाया।

शारीरिक कष्ट को समता से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अच्छे उद्देश्य से साधना करते-करते शरीर में कष्ट पड़ता है, उसको समता भाव से सहा जाए तो निर्जरा का लाभ मिलता है। कायक्लेश के सात प्रकारों में पहला प्रकार है–स्थानायतिक यानी कायोत्सर्ग में स्थिर होना। ये सात आसन या मुद्राओं के प्रकार हैं। कायोत्सर्ग खड़े-खड़े, बैठे-बैठे और लेटे-लेटे भी होता है। खड़े-खड़े कायोत्सर्ग करना विशेष बात होती है। कायोत्सर्ग–शरीर का ममत्व छोड़ देना, शरीर को शिथिल कर देना, स्थिर रखना। आत्मा अलग, शरीर अलग ये भेद-विज्ञान जानें। दूसरा है–उत्कुटुकासनिक। दोनों पैरों को भूमि पर टिकाकर दोनों पुतों को भूमि से न छुआते हुए जमीन पर बैठना। इसका प्रभाव वीर्य ग्रंथियों पर पड़ता है और यह ब्रह्मचर्य की साधना में बहुत फलदायी है।

तीसरा है–प्रतिमास्थायी। भिक्षु-प्रतिमाओं की विविध मुद्राओं में स्थित रहना। चौथा प्रकार है–वीरासनिक-बद्धपद्मासन की भाँति दोनों पैरों को रख हाथों को पद्मासन की तरह रखकर बैठना। इससे धैर्य, संतुलन और कष्टसहिष्णुता का विकास होता है। पाँचवाँ प्रकार है–नैषधिक, इसका अर्थ है, बैठकर किए जाने वाले आसन जैसे–उत्कुटुका, गोदोहिका, समपादपुता, पर्यंका, अर्द्धपर्यंका। छठा है–दंडायतिक–दंड की तरह सीधे लेटकर दोनों पैरों को परस्पर सटाकर दोनों हाथों को दोनों पैरों से सटाना। इससे दैहिक प्रवृत्ति और स्नायविक तनाव का विसर्जन होता है। सातवाँ है–लगंडशायी–भूमि पर सीधे लेटकर लकुट की भाँति एडियों और सिर को भूमि से सटाकर ऊपर उठाना। इससे कटि के स्नायुओं की शुद्धि और उदर-दोषों का शमन होता है। ये सात प्रकार कायक्लेश के बताए हैं। ये विभिन्न प्रकार की मुद्राओं की आसनों की साधना है।

साधना में शरीर की स्थिरता अपेक्षित है। शरीर की स्थिरता होने से मन की एकाग्रता को साधने में भी सहायता मिलती है। शरीर को साधना भी अपने आपमें एक विशेष बात है। आसनों से शरीर को साधा जा सकता है, साथ में मन को भी नियंत्रित किया जा सकता है। कायक्लेश में तो और भी साधनाएँ हैं। खुजली आए तो खुजली न करना, शरीर विभूषित नहीं करना, आदि। आदमी चरित्र बनाता है, कपड़े नहीं। ज्यादा मूल्य ज्ञान का, साधना का है। निर्जरा का यह पाँचवाँ भेद काय-शरीर से संबंधित है। शरीर को साधने से, शरीर को कष्ट देने से संबंधित है। हमारा लक्ष्य अच्छा हो, प्रयास अच्छा हो फिर थोड़ा कष्ट आए तो आए। उसे सहन करना चाहिए। 'सहन करो, सफल बनो।' हमारा शरीर अच्छे काम, अच्छी साधना में लगे, यह काम्य है।

मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

बच्चों में संस्कार मंत्र दीक्षा के साथ

उधना

अभातेयुप निर्देशित मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन जूम एप के द्वारा ऑन लाइन किया गया। कोरोना काल में भारत सरकार द्वारा दिए गए निर्देश अनुसार इस साल की मंत्र दीक्षा का आयोजन ऑन लाइन किया गया।

अभातेयुप द्वारा इस कार्यक्रम की लिंक प्रेषित की गई थी, उसे तेयुप, उधना ने अधिक से अधिक श्रावकों तक व्हाट्स एप व फेसबुक के माध्यम से पहुँचाया। उधना महिला मंडल, ज्ञानशाला परिवार का विशेष सहयोग रहा। महिलाओं के सहयोग से अनेकानेक बच्चों ने ऑन लाइन के माध्यम से जुड़कर इस वर्ष मंत्र दीक्षा ग्रहण की।

बारडोली

अभातेयुप के तत्त्वावधान में पश्चिमांचल शाखा अंतर्गत तेरापंथ ज्ञानशाला द्वारा तेयुप बारडोली के मार्गदर्शन में एवं मुनि हिमांशु कुमार जी के मंगलमय आशीर्वचन द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जूम अंतर्गत किया गया। मंगलाचरण ज्ञानशाला परिवार द्वारा हुआ। जिसमें उपासक महावीर एवं सुधांशु चंडालिया ने अपनी प्रस्तुति प्रदान की।

बारडोली से अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता ने भावना प्रेषित की। पश्चिमांचल प्रभारी रौनक सरणोत ने विशेष श्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल, मुख्य ज्ञानशाला प्रशिक्षिका धर्मिष्ठा मेहता आदि समस्त ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, बारडोली की उपस्थिति रही। सभी बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की गई।

जीन्द

तेरापंथ सभा भवन में तेयुप के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के माध्यम से सामुहिक बच्चों ने किया। जीन्द तेयुप के अध्यक्ष रितेश जैन ने सभी बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलाई। जीन्द तेयुप के मंत्री कुणाल मित्तल ने जीवन में मंत्र दीक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। संदीप जैन ने भजन के माध्यम से सारे वातावरण को संगीतमय कर दिया। इस अवसर पर गौरव जैन, संदीप जैन, आशु जैन, स्नेहा जैन उपस्थित रहे।

रक्तदान शिविर कैंप का आयोजन

विरार।

तेयुप लॉक डाउन के समय मानव सेवा में समर्पित सभी आयामों में अपना योगदान तन-मन-धन से देकर पूरा कर रही है। इस अवसर पर अध्यक्ष नरेश बोहरा व मंत्री राजेश सोलंकी ने द्वारा तेरापंथ भवन में ब्लड डोनेशन कैंप आयोजित किया। रक्तदान शिविर में २३ यूनिट ब्लड एकत्रित किया गया।

पर्यावरण सप्ताह का आयोजन

डूंगरी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा तेयुप डूंगरी की प्रथम २०२०-२१ नवगठित कार्यकारिणी द्वारा पर्यावरण को समर्पित 'वृक्षारोपण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र और पर्यावरण के जतन की जानकारी द्वारा तेयुप भवन से की गई। तत्पश्चात तेयुप डूंगरी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष विकास दक एवं नवनिर्वाचित मंत्री कमल भटेवरा की अध्यक्षता में वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत कुल २० वृक्षों का रोपण किया गया। तेयुप के सभी कार्यकर्ता इसमें सहभागी बने। अध्यक्ष विकास दक ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई सार्वीगण	(75 लाख रुपये)
अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(31 लाख रुपये)
श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्सामपुर	(11 लाख रुपये)
श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(5 लाख रुपये)

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

शाहदरा, दिल्ली।

रतनगढ़ प्रवासी, दिल्ली निवासी स्व० भीकमचंद डागा के सुपौत्र एवं सुधीर-संगीता डागा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा और जतन शामसुखा ने पूरे विधि-विधान और मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। इस कार्यक्रम में सुधीर के बड़े भाई संदीप और पंकज डागा भी उपस्थित थे। डागा परिवार ने तेयुप दिल्ली को अनुदान राशि भेंट की।

जयपुर।

विजयचंद-विजया छलानी के सुपौत्र एवं सीमा-अमित छलानी के सुपुत्र एवं लिलम सरला मुणौत के दोहिते का जैन संस्कार विधि से नामकरण संस्कार उनके आवास पर संपन्न करवाया गया।

परिषद के पूर्व मंत्री एवं ही संस्कारक राजेश जैन धाड़ेवा ने मंगलमय वातावरण में मंत्रोच्चार का उच्चारण करते हुए जैन संस्कार विधि से यह कार्य संपन्न करवाया।

भायंदर।

पवन लुणावत की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा तेरापंथ भवन में प्रवक्ता उपासक भगवती भंडारी व उपासक परेश भंडारी के द्वारा किया गया। जिसमें पवन की सुपुत्री का नाम राशि अनुसार कनक लुणावत रखा गया। तत्पश्चात साध्वीश्री जी के दर्शन कर मंगलपाठ द्वारा समापन हुआ। इस अवसर पर तेयुप, भायंदर सदस्य पुत्री के पिता पवन लुणावत ने आजीवन गुटखा खाने का त्याग किया।

साउथ हावड़ा।

चुरू निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी गुलाबचंद-कमला देवी पारख के सुपौत्र एवं अंकित-सुरभि पारख के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक बजरंग डागा और राकेश चोरड़िया ने पूरे विधि-विधान और मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। इस कार्यक्रम में परिवार के स्वजन एवं ननिहाल पक्ष सुरेश मणौत सपरिवार उपस्थित थे। परिषद द्वारा पारख और मणौत परिवार को भी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

वैवाहिक वर्षगाँठ

अहमदाबाद।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष पंकज डांगी एवं उनकी जीवन-संगिनी रंजना डांगी की १३वीं वैवाहिक वर्षगाँठ जैन संस्कार विधि से आयोजित की गई। संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं आनंद बोथरा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि को सानंद संपादित किया। पंकज ने उपस्थिति सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया एवं अर्जुन लाल डांगी ने अपने आशीर्वचन दिए। सहमंत्री सागर सालेचा ने परिषद की ओर से आभार ज्ञापन किया तथा कार्यक्रम का संचालन मंत्री संदीप मांडोत ने किया।

बारडोली।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा रोशनलाल बडोला एवं जतन देवी बडोला की ५५वीं वैवाहिक वर्षगाँठ का आयोजन संपूर्ण जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक के रूप में अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष महावीर दक, मंत्री साहिल बाफना, उपाध्यक्ष राजेश चोरड़िया, सभा के उपाध्यक्ष अनिल बाफना आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। दंपति को १ वर्ष हेतु प्रत्याख्यान दिलवाए गए एवं स्मृति चिह्न भेंट देकर मंगलमय आध्यात्मिक जीवन हेतु शुभकामना प्रदान की गई।

महिला मंडल के विविध कार्यक्रम

साधारण सभा का आयोजन

बरोडा।

अभातेममं के निर्देशानुसार, तेममं द्वारा जूम एप पर ऑन लाइन मीटिंग द्वारा साधारण सभा का आयोजन किया गया। एडवोकेट रेणुका छाजेड़ ने संचालन किया। विरल श्रीमाल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अध्यक्षा पार्वती बोलया ने अपने वक्तव्य में सभी सहभागियों का स्वागत करते हुए संविधान विषयक जानकारी दी।

मंत्री विमला हिरण ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष प्रभा मेहनोत ने आय-व्यय का ब्योरा दिया। उपाध्यक्षा कुसुम बरमेचा ने भिक्षु स्वामी की ढाल प्रस्तुत की। गुजरात प्रभारी भारती पारख ने गत वर्ष के कार्यकाल की सराहना की। उपासिका गीता श्रीमाल, उपासिका स्नेहलता समदड़िया, भगवती श्रीमाल द्वारा भिक्षु स्वामी जन्म दिवस निमित्त भिक्षु स्वामी के जीवन में घटित घटनाओं के बारे में बताया गया। २० बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया प्रभा मेहनोत ने आभार व्यक्त किया।

मैसूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं की १७वीं साधारण सभा जूम एप पर रखी गई। मीटिंग की शुरुआत सभा भवन में विराजित मुनि अर्हत कुमार जी आदि के मंगलपाठ से हुई। नमस्कार मंत्र से मंगलाचरण हुआ। अभातेममं की सदस्य एवं महिला मंडल की अध्यक्ष सुधा नौलखा द्वारा मंडल की बहनों का स्वागत किया गया। पूरी टीम को वर्षभर में सहयोग देने के लिए धन्यवाद किया। उपाध्यक्ष इंदु पितलिया ने संविधान का वाचन किया।

मंडल की मंत्री सीमा देरासरिया ने वर्ष भर के कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और सभी कार्यक्रमों की जानकारी दी। मंडल कोषाध्यक्ष आशा पितलिया ने वर्ष भर का आय-व्यय ब्योरा दिया। कन्या मंडल प्रभारी मनीषा गन्ना ने कन्या मंडल की वर्ष भर में हुई गतिविधियों की जानकारी दी। आभार मनीषा गन्ना ने किया। संचालन जूम एप पर सीमा देरासरिया ने किया। मीटिंग में लगभग ५८ बहनों की सहभागिता रही।

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं की वार्षिक साधारण सभा जूम पर आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रचार-प्रसार मंत्री-द्वितीय लता पारख ने नमस्कार महामंत्र से किया। तत्पश्चात अध्यक्ष शांति दुधोड़िया ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए साल भर में मिले सहयोग के लिए आभार ज्ञापित किया। गीत का संगान प्रचार-प्रसार मंत्री संगीता आच्छा ने किया। उपाध्यक्ष पुष्पा हिरण ने संविधान का वाचन करते हुए संक्षिप्त जानकारी दी। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन उपाध्यक्ष-द्वितीय अलका खटेड़ ने किया।

तत्पश्चात कन्या मंडल की रिपोर्ट का वाचन संयोजिका हार्दिक मूथा ने किया। गत वर्ष की रिपोर्ट का वाचन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया। कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर ने वर्ष भर के आय-व्यय का ब्योरा दिया। अभातेममं के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कात्रेला ने साधारण सभा आरोहण पर अपने विचार व्यक्त किए। अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य अनीता चोपड़ा ने भी बहनों को मोटिवेट किया। कन्या मंडल प्रभारी सुभद्रा लुणावत ने नारी लोक प्रश्नोत्तरी से ज्यादा से ज्यादा जुड़ने की प्रेरणा दी। संरक्षिका कमला दुगड़, निवर्तमान अध्यक्ष कमला गेलड़ा, परामर्शक उषा बोहरा, सुमन बरमेचा सभी ने महिला मंडल के सफलतम कार्यकाल की मंगलकामनाएँ की। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विमल चिपड़, टीपीएफ के अध्यक्ष अनिल लुणावत, तेयुप अध्यक्ष रमेश खटेड़ सभी ने महिला मंडल को शुभकामनाएँ प्रेषित की। जूम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से साधारण सभा के लिए रमेश खटेड़ का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री गुणवंती खाटेड़ ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

'अभिव्यक्ति भावों की' सेमिनार का आयोजन

नागपुर।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल द्वारा 'अभिव्यक्ति भावों की' सेमिनार ऑन लाइन आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। अध्यक्षा भारती बाबेल ने सबका स्वागत करते हुए वक्तव्य दिया। तेरापंथ धर्मसंघ के विभिन्न पहलुओं पर सात बहनों ने वक्तव्य, कविता, मुक्तक द्वारा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया। युवती बहनों ने तेरापंथ एक्सप्रेस के माध्यम से जीवन के आचार-विचार पर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री प्रमिला मालू ने किया व आभार मंत्री सरिता आर डागा ने किया। कार्यक्रम के तकनीक संचालन में मुदित बाबेल का सहयोग रहा। कार्यक्रम सफल रहा व अच्छी उपस्थिति रही।

आत्मा का शरीर से संपूर्णतया वियोग हो...

(पृष्ठ ३ का शेष)

शास्त्रों को देखें कि प्रायश्चित की व्यवस्था भी दी गई है। गलती हो जाए तो ये प्रायश्चित है। गलती हो सकती है, तभी तो प्रायश्चित है। बीमार होगा तो दवा लेनी पड़ेगी। संयम की दृष्टि से साधु भी दोष सेवक बन सकता है। प्रायश्चित दो प्रकार का बताया गया है–तप और छेद प्रायश्चित। यह प्रायश्चित देने वाला देखता है कि किसको क्या प्रायश्चित देना। पहले दवा दो, दवा से काम न चले तो फिर सर्जरी करो। प्रायश्चित से गलती का निराकरण हो सकता है। साधु और गृहस्थ गलती हो सकती है। गलती हो जाए तो फाँसी की सजा मत दो, सुधारने का प्रयास करो। दोबारा गलती न हो।

आज रविवार है, दो अगस्त है, श्रावण का मास चल रहा है। हम लोग हैदराबाद चतुर्मास निरत है। प्रवचन तो चल रहे हैं। रविवार होने के कारण नई योजना के अनुसार आगम के सिवाय और भी कार्यक्रम चले। योजना बनी आज श्रावक सम्मेलन के रूप में कुछ बात हो। विषय है–जैन श्रावक की जीवन शैली। जीवन एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जीवन दो तत्त्वों का योग है, आत्मा और शरीर। दोनों में से एक है, तो जीवन नहीं। आत्मा और शरीर का वियोग होना मृत्यु है। आत्मा का शरीर से संपूर्णतया वियोग हो जाना मोक्ष है।

जीवन की शैली क्या हो? जीवन किस तरह से जीना। साधु की जीवनशैली अलग हो सकती है। जैन श्रावक गृहस्थ की शैली अलग हो सकती है। दोनों में बड़ा अंतर होता है। जैन श्रावक के जीवन में श्रद्धा का भाव होना चाहिए। देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा। आचरण अलग बात है, आस्था होना अलग बात है। कठिन परिस्थिति में भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। धर्म को छोड़ देंगे तो भव भव में डूबना पड़ेगा। धन जाएगा तो श्रद्धा अडिग रहेगी। श्रावक में आचरण ठीक हो। नमस्कार महामंत्र का जप करना चाहिए। खान-पान के प्रति जागरूक रहें। मांसाहार का प्रयोग न हो जाए। जमीकंद से भी बचने का प्रयास करें, त्याग करें। नशीले पदार्थों से दूर रहें। हर मनुहार को मानना जरूरी नहीं है। मनुहार मन की हार न बन जाए। व्यवहार में ईमानदारी रहे, धोखाधड़ी न हो। आर्थिक शुचिता रहे। सबसे बड़ा लाभ है, आत्मा का कल्याण। ईमानदारी परास्त-परेशान हो सकती है पर पराजित नहीं होती जो मुश्किल से डरता नहीं है, उसके मुश्किल नहीं आ सकती। धार्मिक लाभ, आराधना जिस रूप में हो सके करनी चाहिए। कितने-कितने चातुर्मास साधु-साध्वियों के हो रहे हैं। समण श्रेणी के भी हो रहे हैं। उपासक श्रेणी भी पर्युषण यात्रा करती है, पर इस बार नहीं हो पा रही है। हमारे श्रावक खूब धार्मिकता का जीवन जीएँ। उनके चित्त में समाधि रहें। जितना व्रत त्याग हो सके करें। बारह व्रत को स्वीकार करें। 'श्रावक व्रत धारो' गीत के पद्य का सुमधुर संगान किया। रात्रि भोजन भी चतुर्मास में त्याग करें। सभी के जीवन में खूब धार्मिकता बढ़े।

मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि शिष्य भी आचार्य के लिए शरण बन सकता है। हम अपली गलती की निंदा करेंगे तो हमारा मार्ग प्रशस्त होगा। दोपहर में मुनि कुमार श्रमण जी का एवं रात्रि में साध्वीवर्या जी का प्रवचन प्रारंभ हुआ। साध्वीवर्या जी ने कौन सा पथ चुनें इस विषय पर विस्तार से समझाया।

व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी ने अपनी भावना व्यक्त की।

✦ *जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथी सभा के साधारण सभा के विविध आयोजन

जसोल

तेरापंथी सभा, जसोल के अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा की अध्यक्षता में साधारण सभा का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ मीटिंग का शुभारंभ हुआ। सभा मंत्री संपतराज चौपड़ा द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन व कोषाध्यक्ष डूंगरचंद वडेरा द्वारा वार्षिक आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया गया।

चुनाव अधिकारी चंद्रशेखर छाजेड़ के निर्देशन में चुनाव मनाव प्रणाली से संपन्न हुए। जिसमें तेरापंथी सभा, जसोल के वर्ष २०२०-२२ के लिए सर्वसम्मति से निर्विरोध मोतीलाल जीरावला बने। नव निर्वाचित अध्यक्ष मोतीलाल जीरावला ने पूरे सदन से विशेष उमंग के साथ कार्य करने का आह्वान किया। सभी तेरापंथ सभा साथियों ने सेवा कार्यों में पूर्ण सहयोग देने का कहा। तत्पश्चात शासनश्री साध्वी भानुकुमारी जी से मंगलपाठ सुना।

साउथ हावड़ा

तेरापंथी सभा का वार्षिक अधिवेशन हावडा मिल्स क्लब हाउस में आयोजित हुआ, जिसमें अनेक सदस्यों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ प्रारंभ हुए इस अधिवेशन में लक्ष्मीपत बाफना, मनोज कोचर एवं सुशील सुराणा ने सभा गीत प्रस्तुत किया। शिखरचंद लुणावत ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अध्यक्ष सुशील कुमार गिड़िया ने अपने वक्तव्य में साल भर के कार्यों की संक्षिप्त जानकारी सदन के सामने प्रस्तुत की।

उपस्थित सभी सदस्यों ने मनोनीत पदाधिकारियों को बधाई प्रेषित की। अधिवेशन में संजय नाहटा, जवरीमल नाहटा, लक्ष्मीपत बाफना, मदनचंद नाहटा, ओमप्रकाश बांठिया, सुशील सुराणा, दीपक गिडिया एवं तेयुप अध्यक्ष पवन कुमार बैंगाणी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। लक्ष्मीपत बाफना ने आए हुए सभी व्यक्तियों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा सहमंत्री मनोज कोचर ने किया।

चंडीगढ़

तेरापंथी सभा की बैठक अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में हुई। बैठक में पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में पिछले दो वर्षों का विवरण रखा गया। उसके बाद मुख्य दो वर्ष के लिए बैठक में लगातार तीसरी बार वेद प्रकाश जैन को तेरापंथी सभा, चंडीगढ़ का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। निर्वाचन के बाद अणुव्रत भवन में विराजमान मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' व मुनि अभय जी ने अध्यक्ष एवं समस्त पदाधिकारियों व सदस्यों को मंगल आशीर्वाद दिया।

सभी को प्रेरणा देते हुए मनीषी संत ने कहा कि हमें तन-मन से समाज व धर्मसंघ की सेवा करनी चाहिए।

विजयनगर

साधारण सभा विजयनगर भवन में साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के मंगलपाठ से बंशीलाल पितलिया की अध्यक्षता में मंगलाचरण द्वारा एवं श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन से शुरू की गई। अध्यक्ष बंशीलाल पितलिया ने सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया। मंत्री कमल तातेड़ ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, कोषाध्यक्ष शंकरलाल हिरन ने हिसाब का लेखा-जोखा बताया। आगामी वर्ष २०२०-२२ अध्यक्ष हेतु राजेश चावत का नाम प्रस्तावित हुआ। इस अवसर पर उपाध्यक्ष पन्नालाल लुणिया, महावीर टेबा नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत, भंवरलाल मांडोत, सुभाष पोखरना, सुरेश मांडोत, रमेश मेहता, पारस दक एवं सदस्यों की उपस्थिति रही एवं सभी ने अपनी मंगलकामनाएँ दी।

महिला मंडल के अध्यक्ष कुसुम डांगी ने भी अपनी मंगलकामनाएँ दी। नव मनोनीत अध्यक्ष राजेश चातव के साथ अध्यक्ष बंसीलाल ने भवन में विराजित साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के दर्शन कर मंगलपाठ प्राप्त किया। साध्वीश्री जी ने अपना उद्बोधन दिया। धन्यवाद सहमंत्री जयंतिलाल बोहरा ने किया।

चेन्नई

तेरापंथी सभा, ट्रस्ट पल्लावरम का वार्षिक अधिवेशन स्थानीय तेरापंथी सभा भवन में आयोजित हुआ। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के मंगल स्मरण के साथ कार्यवाही प्रारंभ हुई। अध्यक्ष नवीन कोठारी ने स्वागत भाषण दिया। दानदाताओं का आभार व्यक्त किया। मंत्री मनोहर कोठारी ने मंत्री प्रतिवेदन एवं कोषाध्यक्ष छगनमल पिरोदिया ने आय-व्यय रिपोर्ट प्रस्तुत की।

चुनाव अधिकारी ने एकमात्र प्राप्त आवेदन पत्र के आधार पर प्रकाश भंसाली को वर्ष २०२०-२२ के अध्यक्षीय पद पर निर्विरोध निर्वाचित किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश भंसाली ने कहा कि संघ और संघपति की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। संगठन मंत्री करण कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

ऑन लाइन स्कूल पर भाषण प्रतियोगिता

गुवाहाटी।

वैश्विक महामारी के चलते 'बदलती शिक्षा पद्धति ऑन लाइन स्कूल' आज एक महत्त्वपूर्ण विषय है। इस विषय को लेकर अणुव्रत समिति ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उपाध्यक्ष-द्वितीय बजरंग बैद ने जानकारी देते हुए बताया कि इस प्रतियोगिता के तीनों ग्रुपों में कुल ५५ प्रतियोगियों ने भाग लिया।

निर्णायक प्रदीप जैन के अनुसार आज की शिक्षा पद्धति समय की माँग है। उन्होंने कहा कि मेरे लिए निर्णय लेना थोड़ा मुश्किल हो गया था, क्योंकि सभी ने अपने भाषण के माध्यम से इस विषय पर बहुत सुंदर प्रस्तुति दी।

प्रतियोगिता के दूसरे निर्णायक सीए मनोज नाहटा ने भी सभी की प्रस्तुति को सुंदर बताते हुए अपना संयुक्त निर्णय प्रस्तुत किया। उनके निर्णयानुसार ग्रुप-ए (जूनियर-१२ वर्ष तक) जिसमें प्रथम प्रेक्षा छाजेड़, द्वितीय भाव्या छाजेड़ और तृतीय रही मुस्कान सुराणा साथ ही रितिका दफ्तरी एवं स्वप्निल नाथ को प्रोत्साहन श्रेणी में चयनित किया गया। ग्रुप-बी (१२ वर्ष से अधिक) के बच्चों ने भाग लिया। उसमें प्रथम सिद्धांत बुच्चा, द्वितीय गरिमा जम्मड़, तृतीय करण सुराणा तथा ऐश्वर्या बोथरा, कोमल सेठिया, मुस्कान पटवा एवं पलक सेठिया को प्रोत्साहन श्रेणी में चयनित किया गया। अभिभावक श्रेणी में प्रथम लता जैन एवं नेहा चोरड़िया जैन संयुक्त रूप से, द्वितीय सीमा बुच्चा, तृतीय बबीता पटवा रही। वर्षा सामसुखा एवं कविता बांठिया को प्रोत्साहन श्रेणी में चयनित किया गया।

इस प्रतियोगिता में एकमात्र विशेष असमिया भाषा में प्रस्तुति रही उषा सुराणा की। अध्यक्ष छतरसिंह चोरड़िया ने बताया कि यह कार्यक्रम काफी संतोषप्रद रहा। उन्होंने इस प्रतियोगिता के संयोजक राजकरण बुच्चा, पवन जम्मड़ एवं सहमंत्री मनोज सेठिया के साथ सभी सदस्यों को इस कार्यक्रम के सफल संपादन हेतु धन्यवाद दिया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

शहादा।

साध्वी कीर्तिलता जी, साध्वी शांतिलता जी, साध्वी पूनमप्रभा जी व साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी का चातुर्मासिक आध्यात्मिक प्रवेश सभा भवन में हुआ। सभा अध्यक्ष कैलाश संचेती, महासभा सदस्य ऋषभ गेलड़ा, महिला मंडल अध्यक्षा साधना गेलड़ा, तेयुप मंत्री चंद्रशेखर संचेती, मीना संचेती, स्मिता कुचेरिया आदि ने साध्वीश्री जी की अगवाणी करते हुए मंगलकामना प्रेषित की।

रूपाली गेलड़ा ने अष्टकम प्रस्तुति किया, महिला मंडल की बहनों ने गीत गाया। तेयुप के अध्यक्ष ऋषभ गेलड़ा एवं अभातेयुप के सदस्य सुमित गेलड़ा ने स्वागत किया। साध्वीवृंद ने अपने विचार रूपक के माध्यम से रखे। साध्वीश्री जी की विशेष प्रेरणा से तीन दिवसीय जप रखा गया। भवन में साध्वीश्री जी की प्रेरणा से एकासन की दो पचरंगी सानंद संपन्न हो चुकी है। मौन की पचरंगी, सामायिक की पचरंगी एक छह, एक अठाई आदि छोटी-मोटी तपस्या व कार्यक्रम गुरु कृपा से चल रहे हैं।

इम्यूनिटी वर्धक काढा का वितरण

सूरत-उधना।

अणुव्रत समिति द्वारा भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा प्रमाणित आयुर्वेदिक काढ़ा का निःशुल्क वितरण किया गया। सूरत महानगर पालिका द्वारा आयुष मंत्रालय की मार्गदर्शिका अनुसार आयुर्वेदिक काढ़ा तैयार किया जा रहा है। वर्तमान कोरोना महामारी की स्थिति में यह काढ़ा शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है। यह काढ़ा कोरोना जैसी महामारी का मुकाबला करने में सहायक बन रहा है।

जनहित के इस कार्य में अणुव्रत समिति सूरत-उधना के परामर्शक अर्जुन मेडतवाल, अध्यक्ष नेमीचंद कावड़िया, मंत्री विजयकांत खटेड़, कोषाध्यक्ष विमल लोढ़ा, तेरापंथी सभा, उधना के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, कोषाध्यक्ष निर्मल चपलोत, तेयुप के नवमनोनीत अध्यक्ष अरुण चंडालिया, अणुव्रत समिति के कार्यसमिति सदस्य राजूभाई भलावत, विकास सिरोहिया आदि कार्यकर्ताओं ने उत्साह से भाग लिया।

तेरापंथ धर्मसंघ में उत्सवों के सृजनकर्ता श्रीमद्जयाचार्य

❑ मुनि कमल कुमार ❑

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ एक विकासशील धर्मसंघ है। इस संघ के निर्माता आचार्य भिक्षु थे। जब उन्होंने स्थानकवासी संप्रदाय से अभिनिष्क्रमण किया तब भयंकर कष्टों का सामना करना पड़ा। उन्हें रहने को स्थान, पहनने को वस्त्र और जीवन-यापन के लिए आहार-पानी भी पूरा उपलब्ध नहीं होता था। परंतु उनका शुद्ध साधना करने का लक्ष्य उन्हें निरंतर गतिमान बनाए रखा। इसलिए वे निर्भीक बनकर बढ़ते रहें। उन्होंने समय-समय पर साधुओं के लिए मर्यादाएँ बनाई और कहा इन मर्यादा का पालन करने वाला अपने जीवन में सफलता को प्राप्त करता है। उन मर्यादाओं में एक धारा यह भी है कि मैंने वर्तमान समय देखकर मर्यादाओं का निर्माण किया है। उत्तरवर्ती आचार्य इनमें कोई परिवर्तन करें अथवा कोई नई मर्यादा निर्माण करें उसे सब साधु-साध्वी सहर्ष स्वीकार करें। उनका यह विराट चिंतन संघ विकास का मुख्य कारण बना।

उत्तरवर्ती आचार्यों ने मूल की सुरक्षा करके कई प्रकार का परिवर्तन भी किया तभी यह संघ नित नए आयामों के द्वारा जन-जन के आकर्षण का मुख्य केंद्र बन सका। आज संघ का यह नयनाभिराम रूप जैन-अजैन सबको सम्मोहित कर रहा है।

श्रीमद् जयाचार्य तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य थे। अपने द्वितीय आचार्य श्री भारीमल जी के युग में दीक्षा ग्रहण की। बाल्यकाल से ही आप प्रतिभावान थे। आपकी दीक्षा से पूर्व ही आचार्य भारीमल जी ने यह अनुमान लगा लिया था कि मेरे पीछे ऋषिराय तू ही है, अब तुझे अपने पीछे की तैयारी करनी है, इसलिए जयाचार्य को दीक्षा देने के लिए भारीमल जी स्वामी ने ऋषिराय को ही भेजा, इससे स्पष्ट होता है कि वह दीक्षा से पूर्व ही प्राणवान ज्योतिपुंज थे। आचार्य बनने के पश्चात उन्होंने तेरापंथ का मानो कायाकल्प ही कर दिया। उनसे पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ में न साध्वीप्रमुखा थी, न समुच्चय के कार्यों की समुचित व्यवस्था थी, न पुस्तकों का मुद्रांकन था, न साध्वियों के व्यवस्थित सिंघाड़े थे। यह सब जयाचार्य की ही देन है। आज हम मुख वस्त्रिका का उपयोग करते हैं यह भी उनकी सूझबूझ थी। धर्मसंघ में उत्सव का शुभारंभ भी उनके शासनकाल में हुआ। उन्होंने तीन उत्सवों को प्रारंभ किया। चरमोत्सव, पट्टोत्सव, मर्यादा महोत्सव। चरमोत्सव प्रथम आचार्य का मनाया जाए, पट्टोत्सव वर्तमान आचार्य का हो। मर्यादावली निर्माण की अंतिम तिथि की स्मृति बनी रहे। इसलिए माघ शुक्ला सप्तमी को मर्यादा महोत्सव मनाया जाए। उनकी जो कल्पना थी वह धर्मसंघ के लिए लक्ष्मण रेखा कहें या मील का पत्थर कहें निर्बाध गति से गतिमान है। उस समय तेरापंथ का सबसे बड़ा उत्सव माघ महोत्सव था, क्योंकि माघ महीने में अन्यत्र चौमासे वाले साधु-साध्वी भी आसानी से पहुँच जाते थे। सबकी उस समय अच्छी तरह से सारणा-वारणा हो जाती और नए कार्य की प्रेरणा भी मिल जाती। माघ महोत्सव पर चतुर्मासों की नियुक्तियाँ भी हो जाती, इसलिए तीन उत्सवों में इसे वृहद उत्सव कह सकते हैं।

श्रीमद् जयाचार्य ने भगवती जैसे महान आगम का दोहन कर उसकी राजस्थानी भाषा में जोड़ की है वह अपने आपमें श्लाघनीय है। उनकी पद्यमय मारवाड़ी भाषा की कृतियाँ आज भी हजारों लोगों को कंठस्थ है। उनकी रचनाएँ मौलिक और तत्त्वों से भरी हुई है, जिसमें चौबीसी आराधना, प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध विशेष है। उनका जीवन बड़ा ही कलात्मक और प्रेरणास्पद था। स्वाध्याय, अध्ययन, निर्माण, अनुशासन हर क्षेत्र में आपका कौशल विशेषता लिए हुए था। आपने लगभग साढ़े तीन लाख पद्यों का निर्माण करके साहित्य जगत में बहुत बड़ा काम किया। उनकी विविधमुखी दूरदर्शी दृष्टि धर्मसंघ में नए-नए आयामों को जन्म देने वाली सिद्ध हुई।

प्रज्ञा पुरुष श्रीमद् जयाचार्य के १३९वें महाप्रयाण दिवस पर शत-शत नमन-वंदन।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

गुवाहाटी।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी ने संघ को बहुत से नए आयाम दिए, जिनमें अणुव्रत मुख्य है। आपने अणुव्रत के माध्यम से सवंप्रदायविहीन धर्म की स्थापना की। अणुव्रत के द्वारा सबके लिए समान रूप से खुले हैं। इसमें किसी धर्म, जाति का बंधन नहीं है। अणुव्रत आचार संहिता को सब धर्मों के लोगों ने स्वीकार किया। आचार्यश्री तुलसी एवं अणुव्रत पर आधारित इस प्रतियोगिता का मूल उद्देश्य अणुव्रतों का प्रचार-प्रसार करना था। अध्यक्ष छतरसिंह चौरड़िया ने बताया कि इस प्रतियोगिता में ३८ प्रतिभागियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया।

संयोजकद्वय दिलीप दुगड़ एवं संजय चोरड़िया ने निर्णयानुसार सर्वाधिक अंकों के साथ लीला बैद प्रथम, द्वितीय ममता दुगड़ एवं तृतीय स्थान पर रंजू सेठिया और भारती महनोत संयुक्त रूप से रही। ललिता सामसुखा संतोष पींचा को प्रोत्साहन श्रेणी में चयन किया गया। मंत्री नवरत्न गधैया ने सभी संभागियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आपकी सहभागिता एवं कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम से ही यह कार्यक्रम सफल हो पाया है।

शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन

पर्वत पाटिया

तेयुप की नवगठित टीम के शपथ विधि का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र से की गई। विजयगीत का संगान तेयुप उपाध्यक्ष-प्रथम चंद्रप्रकाश परमार ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सभा अध्यक्ष कमल कुमार पुगलिया ने किया।

शाखा प्रभारी सुभाष चपलोत ने नवमनोनीत अध्यक्ष कांतिलाल सिंघवी को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष कांतिलाल सिंघवी ने अपनी पदाधिकारी टीम की घोषणा की तथा निवर्तमान अध्यक्ष सुनील रांका ने नवगठित टीम को शपथ दिलाई। इस कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष कमल कुमार पुगलिया, शाखा प्रभारी सुभाष चपलोत, अभातेयुप से कुलदीप कोठारी, संस्थापक अध्यक्ष अनिल चौधरी, निवर्तमान अध्यक्ष सुनील रांका की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष-प्रथम चंद्रप्रकाश परमार ने और आभार व्यक्त उपाध्यक्ष-द्वितीय दिलीप चावत ने किया।

तिरुपुर

तेयुप के कार्यकाल २०२०-२१ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष विकास सेठिया एवं संपूर्ण कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह जूम मीटिंग द्वारा आयोजित हुआ। मीडिया प्रभारी चेतन बरड़िया ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र से किया गया, जिसके उपरांत कन्या मंडल सदस्य ज्योति भादानी एवं पायल कोठारी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। विजय गीत विजय मालू के द्वारा प्रस्तुत किया।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन जयसिंग जैन के द्वारा किया गया। नवनिर्वाचित सभा अध्यक्ष प्रदीप बोथरा ने विकास सेठिया को शपथ ग्रहण करवाया। इसके उपरांत नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपने कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलवाया। मंत्री संतोष सिंघवी ने कार्यक्रम का संचालन किया और उपस्थित तेरापंथ सभा के अध्यक्ष, तेममं अध्यक्ष-मंत्री, कन्या मंडल, तेयुप एवं किशोर मंडल के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

जयपुर

तेयुप के सत्र २०२०-२१ के लिए नवगठित कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन ऑन लाइन (जूम एप) पर अणुविभा जयपुर केंद्र से आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस पारख ने नवगठित कार्यसमिति को श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस पारख ने नवगठित कार्यसमिति को पद व गोपनीयता के साथ मानवता की सेवार्थ कार्यों हेतु व संघ एवं संघपति के प्रति सदैव समर्पित भाव रखने की शपथ दिलाई।

अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी ने वर्ष-पर्यंत कार्यक्रमों की संक्षिप्त रूपरेखा एवं उन कार्यक्रमों से जुड़े सदस्यों की सेवाओं से अवगत करवाते हुए सुझाव आमंत्रित किए। मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि यह वर्ष जयपुर परिषद का स्वर्ण जयंती वर्ष है और इस वर्ष में भव्यतम कार्यक्रमों का आयोजन कर हमें धर्मसंघ की प्रभावना में उल्लेखनीय योगदान अर्पित करना है।

तेयुप, जयपुर के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र सेठिया, अणुव्रत विश्व भारती में उपमंत्री जय बोहरा, जैन विश्व भारती के महामंत्री गौरव मांडोत, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य हितेश भांडिया, सुबोध पुगलिया व सिद्धार्थ गणैया ने भी नवगठित कार्यसमिति के प्रति अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की। कार्यसमिति के अन्य सदस्यों ने भी तन-मन-धन से धर्मसंघ के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना अभिव्यक्त की।

✦ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के साधारण सभा के विविध आयोजन

नव निर्माण की ओर युवा शक्ति

मुंबई

तेयुप की साधारण सभा का वर्चुअल जूम मीटिंग द्वारा की गई नमस्कार महामंत्र से मीटिंग की शुरुआत हुई। विजय गीत का संगान नितेश धाकड़, नरेंद्र बरमेचा, अशोक बरलोटा द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष गणपत डागलिया द्वारा किया गया। स्वागत भाषण तेयुप दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष पवन बोलिया द्वारा किया गया। मंत्री राहुल मेहता ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष अशोक धींग द्वारा आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष व कल्याण परिषद के संयोजक संदीप कोठारी ने तेयुप दक्षिण मुंबई के कार्य की प्रशंसा की व आगामी कार्यकाल के लिए मंगलकामनाएँ प्रेषित की। ४५ वर्ष के ऊपर कार्यकर्ता का सम्मान किया गया। चुनाव अधिकारी गणपत डागलिया एवं कुलदीप बैद थे। चुनाव प्रक्रिया शुरू की जिसमें पवन बोलिया के नाम का प्रस्ताव कमलेश कच्छारा ने किया। चुनाव अधिकारी ने आगामी कार्यकाल के लिए पवन बोलिया के नाम की नियुक्ति की। गणपत डागलिया, कुलदीप बैद, देवेंद्र डागलिया, दिनेश धाकड़, सोमिल निम्बजा, विनोद बरलोटा, दीपक सुराणा, नितेश धाकड़, राकेश कच्छारा, मुकेश धाकड़ आदि ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष के आगामी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की। संचालन मंत्री राहुल मेहता ने किया। सभा में समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साउथ हावड़ा

तेयुप की साधारण सभा अध्यक्ष राजेश कुमार बैद की अध्यक्षता में जूम एप के माध्यम से आयोजित हुई। सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान से बैठक का शुभारंभ हुआ। विजय गीत का संगान कार्यसमिति सदस्य गगनदीप बैद द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा के सहमंत्री एवं परिषद के सलाहकार समिति सदस्य मनोज कोचर द्वारा किया गया।

अध्यक्ष राजेश कुमार बैद ने साधारण सभा में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का अभिवादन, स्वागत किया। मंत्री पवन कुमार बैंगाणी ने वर्ष भर के कार्यों को मंत्री प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया ने साल भर के आय-व्यय का ब्यौरा सदन के समक्ष रखा। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, राष्ट्रीय महामंत्री मनीष दफ्तरी, शाखा प्रभारी नरेंद्र छाजेड़ ने बैठक की कार्यवाही को सुना और परिषद द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की। अभातेयुप सदस्य एवं परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष सूर्य प्रकाश डागा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। पवन बैंगाणी निर्विरोध अध्यक्ष मनोनीत हुए। नवमनोनीत अध्यक्ष पवन कुमार बैंगाणी ने अपने भाव सदन के समक्ष रखे।

विरार

तेयुप की साधारण सभा मुनि सुव्रत स्वामी जी, मुनि मंगल प्रकाश जी, मुनि बाल शुभम कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। सभा अध्यक्ष तेजराज हिरण द्वारा नमस्कार महामंत्र से वार्षिक सभा की शुरुआत की गई। विजय गीत का संगान तेयुप सदस्यों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन जेटीएन प्रभारी हेमंत धाकड़ द्वारा किया गया। अध्यक्षीय वक्तव्य में विजय धाकड़ ने सभी का स्वागत किया। मदन धाकड़ ने तेयुप के लिए गीतिका प्रस्तुत की। मंत्री राजेश सोलंकी ने वर्ष भर में हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष विनोद कोठारी ने आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया।

चुनाव अधिकारी राकेश चोरड़िया ने नरेश बोहरा के नाम की घोषणा की व नवनिर्वाचित अध्यक्ष को नियुक्ति पत्र दिया व पगड़ी से उनका सम्मान किया। सभा अध्यक्ष तेजराज हिरण, अणुव्रत उपसमिति अध्यक्ष रामेश हिंगड़, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विजय धाकड़ व तेयुप के साथी हेमंत धाकड़ आदि ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष को शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राजेश सोलंकी ने किया।

सूरतगढ़

तेयुप की वार्षिक सभा का आयोजन तेरापंथ भवन में निर्वाचन अधिकारी जयप्रकाश सामसुखा की अध्यक्षता में हुई। जिसमें सर्वसम्मति से आगामी सत्र २०२०-२१ के लिए महेंद्र कुमार बैद को अध्यक्ष नियुक्त किया गया व आगामी कार्यकारिणी बनाने हेतु अधिकृत किया गया।

इससे पूर्व अध्यक्ष दीपक बोथरा ने गत वर्ष में सहयोग करने हेतु सभी का आभार व्यक्त किया। मंत्री आदित्य बांठिया ने गत वर्ष किए गए कार्यों के बारे में बताया। गत वर्ष की आय-व्यय का ब्योरा कोषाध्यक्ष भरत ऋषि रांका ने किया।

पालघर

तेयुप की वार्षिक साधारण सभा तेरापंथ भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी आदि समणीवृंद के सान्निध्य में आयोजित की गई। कन्या मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र से वार्षिक सभा की शुरुआत की गई। विजय गीत का संगान दीपेश बदामिया, प्रीतम राठौड़ ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सभा अध्यक्ष नरेश राठौड़ द्वारा किया गया। अध्यक्षीय वक्तव्य में हितेश सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। मंत्री योगेश राठौड़ ने वर्ष भर में हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष प्रदीप सिंघवी ने आय-व्यय का व्योरा प्रस्तुत किया। किशोर मंडल संयोजक नैतिक सिंघवी ने अपने प्रतिवेदन की प्रस्तुति दी।

आगामी कार्यकाल के लिए प्रकाश बाफना के नाम पर प्रस्तावक व अनुमोदन का पत्र का सबके सामने वाचन किया। जिसके पश्चात चुनाव अधिकारी दिनेश राठौड़ ने प्रकाश बाफना के नाम की घोषणा की व नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश बाफना को नियुक्ति पत्र दिया। प्रकाश बाफना ने अपनी टीम की घोषणा की और कहा कि अध्यक्ष पद की जो जिम्मेदारी है उसका निर्वाहन करने की पूरी कोशिश करूँगा। सविता सिंघवी आदि ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष को शुभकामनाएँ प्रेषित की। समणीवृंद ने नव निर्वाचित टीम को मंगलपाठ प्रदान किया। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन नव निर्वाचित मंत्री दिलीप परमार ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री योगेश राठौड़ ने किया।

सेलम

साधारण सभा का आयोजन जूम एप के माध्यम से किया गया। मीटिंग की शुरुआत विजय गीत अरुण सेठिया द्वारा की गई। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन प्रवीण बोहरा द्वारा किया गया। तत्पश्चात अध्यक्ष अशोक चोपड़ा ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया व अध्यक्षीय वक्तव्य पेश किया।

मंत्री स्नेह बाबेल द्वारा प्रतिवेदन पेश किया। आय-व्यय का ब्योरा कोषाध्यक्ष विनीत नाहटा द्वारा पेश किया गया। चुनाव अधिकारी के रूप में प्रवीण बोहरा और नीतेश फूलफगर ने सेवा प्रदान की और अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष अशोक चोपड़ा गत वर्ष की कार्यकारिण को निरस्त करने के पश्चात वर्ष २०२०-२१ के लिए तेयुप, सेलम के नए अध्यक्ष के रूप में प्रशांत लुंकड़ को मनोनीत किया गया। सभी तेयुप युवकों ने नव निर्वाचित अध्यक्ष को शुभकामनाएँ प्रेषित की। मीटिंग का संचालन स्नेह बाबेल ने किया।

गीत संगान और व्याख्यान हो...

(पृष्ठ ६ का शेष)

गुरुदेव तुलसी जैसे पुरानी राग-रागिनियों के जानकार थे। आज हमारे धर्मसंघ में कितने हैं प्रश्नचिह्न है? गीत गाने वाला जान ले कि मुझे गीत की राग आती है या नहीं। गीत की राग धारणी चाहिए। राग धराणे वाला भी जानकार होना चाहिए। बोलने में उच्चारण आदमी का ठीक हो। शब्द एक वाहन है, अर्थ का। वाहन ठीक होना चाहिए। तभी अर्थ सही होगा। संस्कृत-प्राकृत भाषा के श्लोक याद करने हो तो बचाकर याद करनी चाहिए ताकि उच्चारण सही हो सके। उच्चारण में ध्यान देने कि मात्रा छोटी है या बड़ी। अक्षर संयुक्त मिले हुए हैं, क्या? संयुक्त अक्षर है, तो पहले अक्षर पर थोड़ा जोर देना होता है। अनुस्वार आदि का भी ध्यान रखें। भाषा में उच्चारण शुद्ध हो। जानकार व्यक्ति से उच्चारण सही ग्रहण करना चाहिए। फिर सही रूप में याद किया जाए तो ज्यादा अच्छा रह सकता है। भाषा में उच्चारण का महत्त्व है। एक वचन, बहुवचन में अनुस्वर का अंतर होता है।

चाहे मंत्र हो या स्त्रोत, हिंदी हो या राजस्थानी में भाषा सही होनी चाहिए। ताकि पढ़ने वाला अच्छी तरह से बात का मतलब समझ सके। भाषा शुद्ध होनी चाहिए। पढ़ाने वाला भी उच्चारण शुद्धि का हो। उच्चारण शुद्ध रहेगा तो भाषा रूपी वाहन अच्छा रह सकेगा।

मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि सत् क्रिया से आत्मा उज्ज्वल बनती है, साथ में पुण्य का भी बंध होता है।

गीत पैसों के लिए नहीं बल्कि प्रभु के लिए गाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ७ अगस्त, २०२०

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता ने मंगल देषणा फरमाते हुए समझाया कि ठाणं सूत्र के सातवें स्थान में कहा गया है कि सात स्वर किनसे उत्पन्न होते हैं। ष, ऋ, ग, म, प, ध, नि ये सात स्वर हैं। षडज से ष, ऋ ऋषभ ये पहले बताए थे ये किनसे पैदा होते हैं? दूसरा प्रश्न है–गीत की योनी, जाति क्या है? तीसरा प्रश्न है–उसका उच्छवासकाल कितना होता है। चौथा प्रश्न है–उसके आकार कितने होते हैं?

उत्तर दिया गया है कि सातों स्वर नाभि से उत्पन्न होते हैं। योनी रूदन है। जितने समय में किसी छंद का एक चरण गाया जाता है, उतना उसका उच्छश्वासकाल होता है। उसके आकर तीन होते हैं–आदि में मृदु, मध्य में तीव्र और अंत में मंद। आगे शास्त्रकार बता रहे हैं–गीत के छः दोष होते हैं। पहला दोष है–भीत। भयभीत होकर गाना। गाते समय डरो मत। दूसरा दोष है–द्रुत यानी शीघ्रता से गाना। तीसरा दोष है–ह्रस्व। शब्दों को लघु बनाना। चौथा दोष है–उत्ताल। ताल से आगे बढ़कर या ताल के अनुसार न गाना। पाँचवाँ दोष है–काक्-स्वर। कौए की भाँति कर्ण-कटु स्वर से माना। छठा दोष है–अनुनास। नाक से गाना। गाने वाले जो गायक हैं, वो दोषरहित

गाएँ। तो एक पक्ष ठीक हो गया।

आगे शास्त्रकार बता रहे हैं कि गीत के आठ गुण भी होते हैं। पहला गुण है–पूर्ण स्वर आरोह-अवरोह आदि परिपूर्ण होना। दूसरा गुण है–रक्त। गाए जाने वाले राग से परिस्कृत होना। तीसरा है–अलंकृत। विभिन्न स्वरों से सुशोभित होना। चौथा गुण है–व्यक्त। स्पष्ट स्वर वाला होना। भाषा स्पष्ट होनी चाहिए। पाँचवाँ है–अविभूष्ट। नियत या नियमित स्वर से गाना। छठा है–मधुर। मधुरस्वर से गाना। सातवाँ है–समा ताल-वीणा आदि का अनुगमन करना। आठवाँ गुण है–सुकुमार। कोमल-ललित लय युक्त होना। ये आठ गुण बताए हैं।

दूसरे आठ गुण और भी हैं गीत के। पहला है–उरो-विशुद्ध। दूसरा है–कंठ-विशुद्ध। तीसरा है–सिरो-विशुद्ध। चौथा–मृदु, पाँचवा है–रिङ्खित, छठा–प्रबद्ध, सातवाँ–समताल पदत्क्षेप। आठवाँ–सप्त स्वर शीतल। गेय जो पद है, उनके भी आठ गुण हैं। निर्दोष, सारवत, हेतुयुक्त, अलंकृत, उपनीद, सोपचार, मित, मधुर। छंद तीन प्रकार का होता है। सम, जिसमें चरण और अक्षर सम हो। अर्ध सम-जिसमें चरण या अक्षर में से एक सम हो या अक्षर सम हो। सर्वविषम-जिसमें चरण और अक्षर सब विषम होते हैं। गीत की भाषाएँ दो हैं। शास्त्र के अनुसार संस्कृत और प्राकृत। आजकल की भाषाएँ और भी हो सकती हैं। ये प्राचीन काल की शास्त्र की दृष्टि से हैं। ये दो भाषाएँ प्रशस्त भाषाएँ है। ऋषि भाषित है और भी बातें बताई हैं।

इस तरह ये अनेक बातें संगान के सदंर्भ में। ये सात सुरों का मंडल है। आदमी गीत अनेक भाषाओं में गाता है। गीत किसको खुश करने के लिए गाते हैं। हम पैसों के लिए न गाएँ, प्रभु के लिए गाएँ, यह एक दृष्टांत से समझाया।

मुनि दिनेश कुमार जी ने प्रतिक्रमण के महत्त्व के बारे में समझाया।

गीत संगान और व्याख्यान हो अवसर के अनुकूल : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ६ अगस्त, २०२०

जिन शासक प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम के सातवें अध्ययन की विवेचना करते हुए फरमाया कि सात स्वर बताए गए हैं। इनको याद रखने का सुंदर तरीका है–षऋगम प ध नि। ष-षडज, ऋ-ऋषभ, ग-गांधार, म-मध्यम, प-पंचम, ध-धैयवत, नि-निषाद। शास्त्रकार ने बताया है कि सात सुरों के तीन ग्राम होते हैं। ग्राम शब्द समूहवाची है। संवादी स्वरों का वह समूह-ग्राम है, षडज ग्राम, मध्यम ग्राम और गांधार ग्राम। इन तीनों ग्राम की सात-सात मुर्छणाएँ हैं। सुरों का आरोह और अवरोह मूर्छणा कहलाता है।

स्वर निकलता है। एक स्वर मनोहर हो सकता है। कर्णप्रिय हो सकता है। कोई स्वर कर्ण कटु हो सकता है। आदमी गीत गाता है, उसकी लय और भाव अच्छे हो, गाने का तरीका अच्छा हो, अवसरानुकूल गीत हो, वह गीत श्रोताओं को मनहर आकर्षण करने वाला बन सकता है। कौन सा गीत कब गाना? यह अवसर देखकर निर्णय किया जाना चाहिए। गीत गाना हो, भाषण देना हो या व्याख्यान देना हो अवसर के अनुकूल होना चाहिए। **(शेष पृष्ठ ८ पर)**

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

साभार : अमृतवाणी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - विमल कटारिया द्वारा जे.के. ऑफसेट, 17, डी.एस.आई.डी.सी. रोहतक रोड, नांगलोई, दिल्ली से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित।